Taittirīya-Āraṇyaka

Edited by Subramania Sarma, Chennai

Proofread Version of November 2005

Chapter 7

[[7-1-1]]

शं नो॑ मि॒त्रश्शं वरु॑णः।

शं नो॑ भवत्वर्य॒मा।

शं न॒ इन्द्रो॒ बृह॒स्पति॑ः।

शं नो॒ विष्णु॑रुरुक्र॒मः।

नमो॒ ब्रह्म॑णे।

नम॑स्ते वायो।

त्वमे॒व प्र॒त्यक्षं॒ ब्रह्मा॑सि।

त्वमे॒व प्र॒त्यक्षं॒ ब्रह्म॑ वदिष्यामि।

ऋ॒तं व॑दिष्यामि।

स॒त्यं व॑दिष्यामि।

तन्माम॑वतु।

तद्व॒क्तार॑मवतु।

अव॑तु॒ माम्।

अव॑तु व॒क्तार॓म्।

ॐ शान्ति॒ः शान्ति॒ः शान्ति॑ः॥ १॥

स॒त्यं व॑दिष्यामि॒ पञ्च॑ च॥ १॥

[[7-2-1]]

ॐ शीक्षां व्या॓ख्यास्या॒मः।

वर्ण॒स्स्वरः।

मात्रा॒ बलम्।

साम॑ सन्ता॒नः।

इत्युक्तश्शी᳚क्षाध्या॒यः॥ २॥
शीक्षां पञ्च॑॥ २॥

[[7-3-1]]
स॒ह नौ॒ यशः।
सह नौ ब्र॑ह्मव॒र्च॑सम्।
अथातस्सꣳहिताया उप॑निषदं व्या᳚ख्यास्या॒मः।
पञ्चस्वधि॑क॑र॒णेषु।
अधिलोकमधिज्यौ॑तिषमधिविद्यमधिप्रज॑मध्या॒त्मम्।
ता महासꣳहिता इ॑त्याच॒क्षते।
अथा॑धिलो॒कम्।
पृथिवी पू᳚र्व॑रू॒पम्।
द्यौरुत्त॑ररू॒पम्।
आका॑शस्स॒न्धिः॥ ३॥

[[7-3-2]]
वायु॑स्सन्धा॒नम्।
इत्य॑धिलो॒कम्।
अथा॑धिज्यौ॒तिषम्।
अग्निः पू᳚र्व॑रू॒पम्।
आदित्य उत्त॑ररू॒पम्।
आ॑पस्स॒न्धिः।
वैद्युत॑स्सन्धा॒नम्।
इत्य॑धिज्यौ॒तिषम्।
अथा॑धिवि॒द्यम्।
आचार्यः पू᳚र्व॑रू॒पम्॥ ४॥

[[7-3-3]]
अन्तेवास्युत्त॑ररू॒पम्।
वि॑द्या स॒न्धिः।
प्रवचन॑ꣳ सन्धा॒नम्।

इत्यधिविद्यम्।
अथाधिप्रजम्।
माता पूर्वरूपम्।
पितोत्तररूपम्।
प्रजा सन्धिः।
प्रजननꣳ सन्धानम्।
इत्यधिप्रजम्॥ ५॥

[[7-3-4]]
अथाध्यात्मम्।
अधरा हनुः पूर्वरूपम्।
उत्तरा हनुरुत्तररूपम्।
वाक्सन्धिः।
जिह्वा सन्धानम्।
इत्यध्यात्मम्।
इतीमा महासꣳहिताः।
य एवमेता महासꣳहिता व्याख्याता वेद।
सन्धीयते प्रजया पशुभिः।
ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन सुवर्ग्येण लोकेन॥ ६॥
सन्धिराचार्यः पूर्वरूपमित्यधिप्रजं लोकेन॥ ३॥

[[7-4-1]]
यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः।
छन्दोभ्योऽध्यमृतात्संबभूव।
स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु।
अमृतस्य देव धारणो भूयासम्।
शरीरं मे विचर्षणम्।
जिह्वा मे मधुमत्तमा।
कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवम्।
ब्रह्मणः कोशोऽसि मेधयाऽपिहितः।

श्रुतं मे गोपाय।
आवहन्ती वितन्वाना॥ ७॥

[[7-4-2]]
कुर्वाणा चीरमात्मनः।
वासांसि मम गावश्च।
अन्नपाने च सर्वदा।
ततो मे श्रियमावह।
लोमशां पशुभिस्सह स्वाहा।
आ मा यन्तु ब्रह्मचारिणस्स्वाहा।
वि माऽऽयन्तु ब्रह्मचारिणस्स्वाहा।
प्र माऽऽयन्तु ब्रह्मचारिणस्स्वाहा।
दमायन्तु ब्रह्मचारिणस्स्वाहा।
शमायन्तु ब्रह्मचारिणस्स्वाहा॥ ८॥

[[7-4-3]]
यशो जनेऽसानि स्वाहा।
श्रेयान्वस्यसोऽसानि स्वाहा।
तं त्वा भग प्रविशानि स्वाहा।
स मा भग प्रविश स्वाहा।
तस्मिन्थ्सहस्रशाखे।
नि भगाहं त्वयि मृजे स्वाहा।
यथाऽऽपः प्रवताऽऽयन्ति।
यथा मासा अहर्जरम्।
एवं मां ब्रह्मचारिणः।
धातरायन्तु सर्वतस्स्वाहा।
प्रतिवेशोऽसि प्र मा भाहि प्र मा पद्यस्व॥ ९॥
वितन्वाना शमायन्तु ब्रह्मचारिणस्स्वाहा धातरायन्तु सर्वतस्स्वाहैकं च॥ ४॥

[[7-5-1]]
भूर्भुवस्सुवरिति वा एतास्तिस्रो व्याहृतयः।

तासा॑मु ह स्मै॒ तां च॑तु॒र्थीम्।
माहा॑चमस्यः॒ प्रवे॑दयते।
मह॒ इति॑।
तद्ब्रह्म॑।
स आ॒त्मा।
अङ्गा॓न्य॒न्या दे॒वताः॓।
भूरि॑ति॒ वा अ॒यं लो॒कः।
भुव॒ इत्य॒न्तरि॑क्षम्।
सुव॒रित्य॒सौ लो॒कः॥ १०॥

[[7-5-2]]
मह॒ इत्या॑दि॒त्यः।
आ॒दि॒त्येन॒ वाव सर्वे॓ लो॒का मही॑यन्ते।
भूरि॑ति॒ वा अ॒ग्निः।
भुव॒ इति॑ वा॒युः।
सुव॒रित्या॑दि॒त्यः।
मह॒ इति॑ च॒न्द्रमाः॓।
च॒न्द्रम॑सा॒ वाव सर्वा॓णि॒ ज्योती॑ꣳषि॒ मही॑यन्ते।
भूरि॑ति॒ वा ऋचः॑।
भुव॒ इति॒ सामा॑नि।
सुव॒रिति॒ यजू॑ꣳषि॥ ११॥

[[7-5-3]]
मह॒ इति॒ ब्रह्म॑।
ब्रह्म॑णा॒ वाव सर्वे॓ वे॒दा मही॑यन्ते।
भूरि॑ति॒ वै प्रा॒णः।
भुव॒ इत्य॑पा॒नः।
सुव॒रिति॑ व्या॒नः।
मह॒ इत्यन्न॓म्।
अन्ने॑न॒ वाव सर्वे॓ प्रा॒णा मही॑यन्ते।

ता वा ए॒ताश्चत॑स्रश्चतु॒र्धा᳚।
चत॑स्रश्चतस्रो॒ व्याहृ॑तयः।
ता यो वेद॑।
स वे॑द॒ ब्रह्म॑।
सर्वे᳚ऽस्मै दे॒वा ब॒लिमाव॑हन्ति॥ १२॥
अ॒सौ लो॒को यजु॑ꣳषि॒ वेद॒ द्वे च॑॥ ५॥

[[7-6-1]]
स य ए॒षो᳚ऽन्तर्हृ॑दय आका॒शः।
तस्मि॑न्न॒यं पुरु॑षो मनो॒मयः॑।
अमृ॑तो हिर॒ण्मयः॑।
अन्त॑रेण॒ तालु॑के।
य ए॒ष स्तन॑ इवाव॒लम्ब॑ते।
से᳚न्द्रयो॒निः।
यत्रा॒सौ के॑शा॒न्तो वि॒वर्त॑ते।
व्य॒पोह्य॑ शीर्षकपा॒ले।
भूरित्य॒ग्नौ प्रति॑तिष्ठति।
भुव॒ इति॑ वा॒यौ॥ १३॥

[[7-6-2]]
सुव॒रित्या॑दि॒त्ये।
मह॒ इति॒ ब्रह्म॑णि।
आ॒प्नोति॒ स्वारा᳚ज्यम्।
आ॒प्नोति॒ मन॑स॒स्पति᳚म्।
वाक्प॑ति॒श्चक्षु॑ष्पतिः।
श्रोत्र॑पतिर्वि॒ज्ञान॑पतिः।
ए॒तत्ततो॑ भवति।
आ॒का॒शश॑रीरं॒ ब्रह्म॑।
स॒त्यात्म॑ प्रा॒णारा॑मं॒ मन॑ आनन्दम्।
शान्ति॑समृद्धम॒मृत᳚म्।

इति॑ प्राचीनयो॒ग्योपा॑स्स्व॥ १४॥
वा॒यावमृ॒तमेकं॑ च॥ ६॥

[[7-7-1]]
पृ॒थि॒व्य॑न्तरि॑क्षं॒ द्यौर्दिशो॑ऽवान्तरदि॒शाः।
अ॒ग्निर्वा॒युरा॑दि॒त्यश्च॒न्द्रमा॒ नक्ष॑त्राणि।
आप॒ ओष॑धयो॒ वन॒स्पत॑य आका॒श आ॒त्मा।
इत्य॑धिभू॒तम्।
अथाध्या॒त्मम्।
प्रा॒णो व्या॒नो॑ऽपा॒न उ॑दा॒नस्स॑मा॒नः।
चक्षु॒श्श्रोत्रं॒ मनो॒ वाक्त्वक्।
चर्म॒ मा॒ꣳसꣴ॒ स्नावास्थि॑ म॒ज्जा।
ए॒तद॑धिवि॒धाय॒ ऋषि॒रवो॑चत्।
पाङ्क्तं॒ वा इ॒दꣳ सर्व॑म्।
पाङ्क्ते॑नै॒व पाङ्क्तꣴ॑ स्पृणो॒तीति॑॥ १५॥
सर्व॒मेकं॑ च॥ ७॥

[[7-8-1]]
ओमिति॒ ब्रह्म॑।
ओमिती॒दꣳ सर्व॑म्।
ओमित्ये॒तद॑नुकृति ह॒ स्म॒ वा अ॒प्यो श्रा॑व॒येत्याश्रा॑वयन्ति।
ओमिति॒ सामा॑नि गायन्ति।
ओꣳ शोमिति॑ श॒स्त्राणि॑ शꣳसन्ति।
ओमित्य॑ध्व॒र्युः प्र॑तिग॒रं प्रति॑गृणाति।
ओमिति॒ ब्रह्मा॒ प्रसौ॑ति।
ओमित्य॑ग्निहो॒त्रमनु॑जानाति।
ओमिति॑ ब्राह्म॒णः प्र॑व॒क्ष्यन्ना॑ह॒ ब्रह्मोपा॑प्नवा॒नीति॑।
ब्र॒ह्मैवोपा॑प्नोति॥ १६॥
ओं दश॑॥ ८॥

[[7-9-1]]

ऋतं च स्वाध्यायप्रवचने च।
सत्यं च स्वाध्यायप्रवचने च।
तपश्च स्वाध्यायप्रवचने च।
दमश्च स्वाध्यायप्रवचने च।
शमश्च स्वाध्यायप्रवचने च।
अग्नयश्च स्वाध्यायप्रवचने च।
अग्निहोत्रं च स्वाध्यायप्रवचने च।
अतिथयश्च स्वाध्यायप्रवचने च।
मानुषं च स्वाध्यायप्रवचने च।
प्रजा च स्वाध्यायप्रवचने च।
प्रजनश्च स्वाध्यायप्रवचने च।
प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवचने च।
सत्यमिति सत्यवचा राथीतरः।
तप इति तपोनित्यः पौरुशिष्टिः।
स्वाध्यायप्रवचने एवेति नाको मौद्गल्यः।
तद्धि तपस्तद्धि तपः॥ १७॥
प्रजा च स्वाध्यायप्रवचने च षट्॥ ९॥

[[7-10-1]]
अहं वृक्षस्य रेरिवा।
कीर्तिः पृष्ठं गिरेरिव।
ऊर्ध्वपवित्रो वाजिनीव स्वमृतमस्मि।
द्रविणꣳ सवर्चसम्।
सुमेधा अमृतोक्षितः।
इति त्रिशङ्कोर्वेदानुवचनम्॥ १८॥
अहꣳ षट्॥ १०॥

[[7-11-1]]
वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति।
सत्यं वद।

धर्मं॒ चर।
स्वाध्या᳚यान्मा प्र॒मदः।
आचार्या॑य प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्य॑वच्छे॒त्सीः।
सत्यान्न प्रम॑दि॒तव्य॒म्।
धर्मा॑न्न प्रम॑दि॒तव्य॒म्।
कुशलान्न प्रम॑दि॒तव्य॒म्।
भूत्यै न प्रम॑दि॒तव्य॒म्।
स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रम॑दि॒तव्य॒म्॥ १९॥

[[7-11-2]]
देव॑पितृकार्या॑भ्यां न प्रम॑दि॒तव्य॒म्।
मातृ॑देवो॒ भव।
पितृ॑देवो॒ भव।
आचार्य॑देवो॒ भव।
अतिथि॑देवो॒ भव।
यान्यनवद्यानि॑ कर्मा॒णि।
तानि सेवि॑तव्या॒नि।
नो इ॑तरा॒णि।
यान्यस्माक॑ꣳ सुच॑रिता॒नि।
तानि त्वयो॑पास्या॒नि॥ २०॥

[[7-11-3]]
नो इ॑तरा॒णि।
ये के चारुमच्छ्रेया॑ꣳसो ब्रा॒ह्मणाः।
तेषां त्वयाऽऽसने न प्रश्व॑सित॒व्यम्।
श्रद्ध॑या दे॒यम्।
अश्रद्ध॑याऽदे॒यम्।
श्रि॑या दे॒यम्।
ह्रि॑या दे॒यम्।
भि॑या दे॒यम्।

संवि॑दा दे॒यम्।
अथ यदि ते कर्म॑विचिकिथ्सा वा वृत्तविचि॑कि॑थ्सा वा॒ स्यात्॥ २१॥

[[7-11-4]]
ये तत्र ब्राह्मणा᳚स्संम॒र्शि॑नः।
युक्ता॑ आयु॒क्ताः।
अलूक्षा॑ धर्म᳚कामा॒स्स्युः।
यथा ते॑ तत्र॑ व॒र्ते॑रन्न्।
तथा तत्र॑ व॒र्ते॑थाः।
अथाभ्या᳚ख्या॒तेषु।
ये तत्र ब्राह्मणा᳚स्संम॒र्शि॑नः।
युक्ता॑ आयु॒क्ताः।
अलूक्षा॑ धर्म॑कामा॒स्स्युः।
यथा ते॑ तेषु॑ व॒र्ते॑रन्न्।
तथा तेषु॑ व॒र्ते॑थाः।
एष॑ आदे॒शः।
एष उ॑पदे॒शः।
एषा वे॑दोप॒नि॑षत्।
एत॑दनुशा॒सनम्।
एवमुपा॑सित॒व्यम्।
एवमु चैत॑दुपा॒स्यम्॥ २२॥
स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रम॑दित॒व्यं तानि त्वयो॑पास्या॒नि स्यात्तेषु॑ व॒र्ते॑रन्थ्स॒प्त च॑॥ ११॥

[[7-12-1]]
शं नो॑ मि॒त्रश्शं वरु॑णः।
शं नो॑ भवत्वर्य॒मा।
शं न॒ इन्द्रो॒ बृह॒स्पतिः।
शं नो विष्णु॑रुरुक्र॒मः।
नमो॒ ब्रह्म॑णे।
नम॑स्ते वायो।

त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम्।
ऋतमवादिषम्।
सत्यमवादिषम्।
तन्मामावीत्।
तद्वक्तारमावीत्।
आवीन्माम्।
आवीद्वक्तारम्।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ २३॥
सत्यमवादिषं पञ्च च॥ १२॥

शं नश्शीक्षाꣳ सह नौ यश्छन्दसां भूस्स यः पृथिव्योमित्यृतं चाहं वेदमनूच्य शं नो द्वादश॥ १२॥

शं नो मह इत्यादित्यो नो इतराणि त्रयोविꣳशतिः॥ २३॥

शं नश्शान्तिश्शान्तिः॥

[[7-0-0]]
शं नो मित्रश्शं वरुणः।
शं नो भवत्वर्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः।
शं नो विष्णुरुरुक्रमः।
नमो ब्रह्मणे।
नमस्ते वायो।
त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि।
ऋतं वदिष्यामि।
सत्यं वदिष्यामि।
तन्मामवतु।
तद्वक्तारमवतु।

अवतु माम्।
अवतु वक्तारम्।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥